Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 28thAugust 2019, Revised on 18th Sept. 2019; Accepted 23th Sept. 2019

शोध–पत्र

वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों एवं सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

*रूपलाल कुम्हार, *पी.एच.डी. स्कोलर*
डॉ. अर्पणा श्रीवास्तव, *सहायक आचार्य*
लो.मा.ति.शि.प्र.म. डबोक (सी.टी.ई) उदयपुर
Email – rp9983561975@gmail.com, Mob.-9983561975

मुख्य शब्द– *निराश्रितता, जीवन–यापन, शारीरिक, मानसिक आदि।*

प्रस्तावना

एक निराश्रित बच्चा है जिसके माता–पिता मर चुके है या उन्हें स्थायी रूप से छोड़ दिया है। आम उपयोग में केवल एक बच्चा जिसने मृत्यु के कारण माता–पिता दोनों खो दिये हैं अथवा छोड़कर चले गये हैं, निराश्रितता की श्रेणी में आता है। समाज में ऐसे निराश्रित बच्चों को हेय दृष्टि से देखा जाता है एवं उनके जीवन–यापन करना बड़ा मुश्किल होता है। निराश्रित बालक समाज में साधारणतया उपेक्षा के शिकार होते है और ऐसी स्थिति में इनका शारीरिक, मानसिक एवं भौक्षिक विकास समाज की मात्र दया या उपकार पर ही निर्भर करता है। ऐसी स्थिति में ये निराश्रित बालक अपने जीवनयापन हेतु समय एवं परिस्थितियों के अनुसार कई बार अनुचित मार्गों पर चल देते हैं जिससे समाज में अपराध बोध बढ़ा हैं। यद्यपि समाज के कुछ सज्जन व उपकारी लोगों द्वारा ऐसे निराश्रित बालकों को सहारा जरूर दिया जाता हैं। समय–समय पर विभिन्न सरकारों द्वारा भी इस क्षेत्र में कई प्रयास किये जा रहें है। उक्त अनुसंधान कार्य के वागड़ परिक्षेत्र में निराश्रित बालकों की स्थिति चिंताजनक है। स्थानीय क्षेत्र में असंख्य बालक निराश्रितता के अभिशाप के दंश को झेल रहे हैं।

चूंकि स्थानीय क्षेत्र अनुसूचित जन–जाति बाहुल्य क्षेत्र होने से भौक्षिक, आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्रों में काफी पिछड़ा है जिससे बालकों के विकास हेतु उचित व ठोस प्रयासों का सदैव अभाव रहा हैं। स्थानीय क्षेत्रों में निराश्रित बालकों का विकास वर्तमान में जीवित रहना ही है न कि एक आदर्श व सुखमय जीवन की परिकल्पना करना है। जब एक बालक के ऊपर से माता या पिता अथवा दोनों का साया उठ जाता है, ऐसी स्थिति में उस बालक को अपने आप को जीवित रखना ही सबसे बड़ा संघर्ष है, ऐसे बालक 10 में से मात्र 4 ही आयु पूर्ण कर पाते हैं और जैसे–तैसे कर अपना परिवार आगे बढ़ाते हैं। चूंकि समाज में यह देखने में आता है कि हर गॉव परिवार में तीसरा या चौथा घर ऐसा मिल ही जाता है जिसमें बालक निराश्रित हुए हो और तब ऐसे बालक परिवार के दूसरे सदस्यों के परोपकार की छाया में जीवन जीते हैं जिससे उनको शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, भौक्षिक, सामाजिक तथा राजनैतिक आदि यातनाओं का सामना करना पड़ता है।

शोध समस्या का औचित्य

इस समस्या के औचित्य को निम्न बिन्दुओं द्वारा देखने का प्रयत्न किया गया है।

1. **शिक्षा की दृष्टि से**–शिक्षा ही व्यक्ति के जीवन का आधार होती है जो उसे एक सभ्य सामाजिक प्राणी बनाती है। बिना शिक्षा के व्यक्ति पशु के समान होता है, अतः निराश्रित बालकों में शिक्षा का विकास उनके जीवनयापन के तरीके को प्रभावित करता है। यदि निराश्रित बालक शिक्षित होगा तो निश्चित रूप से सुसंस्कारित एवं निर्भिक जीवनयापन करेगा जिसका प्रभाव आगामी परिवार व पीढ़ियों पर भी लक्षित होगा।

2. **समाज की दृष्टि से**–निराश्रित बालक समाज में सामान्यतया दया का पात्र माना जाता रहा है। समाज के लोग उसे दया की दृष्टि से देखते है और उपेक्षा करते है परन्तुयदि इन निराश्रित बालकों के सम्बन्ध में समाज में फैली इस प्रकार की भ्रान्तियों को दूर कर निराश्रित बालकों को आव यकतानुसार समय–समय पर प्रोत्साहित करने की आव यकता है जिससे ये निराश्रित बालक अपने आप को समाज का अभिन्न अंग मानते हुए विकास के मुख्य धारा से जुड़ सके व समाज निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करते रहे।

3. **मनोविज्ञान की दृष्टि से**–मनोविज्ञान अर्थात् मन का विज्ञान जिससे व्यवहारिक विज्ञान भी कहा जाता है। एक सामाजिक प्राणी के लिए मनोविज्ञान का महत्व और भी बढ़ जाता है। निराश्रित बालक का मनोविज्ञान यदि समृद्ध है तो उसका सर्वांगीण विकास सम्भव है और यदि इसके विपरीत उन निराश्रित बालकों का मनोविज्ञान कमजोर हुआ तो वह समाज के लिए कमजोर पक्ष साबित होता है। सामान्य बालक की अपेक्षा निराश्रित बालक मनोविज्ञान की दृष्टि से प्रोत्साहन के अभाव में कमजोर हो सकते है अतः इन निराश्रित बालकों को समय–समय पर प्रोत्साहित करते हुए मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध बनाना अति आव यक है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली

1. **निराश्रित बालक**–वे बालक जिनके माता–पिता दोनों या दोनों में से एक नहीं हो निराश्रित बालक कहलाते हैं।

2. **स्वसामर्थ्य**–स्व+सामर्थ्य अर्थात् स्वयं की क्षमताओं से विकास करना स्वसामर्थ्य से बालक उन्नति की ओर अग्रसर होता है एवं इसके अभाव में अन्य के मुकाबले पिछड़ता है।

शोध परिकल्पनाएं

शोधार्थी अपने शोध कार्य के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण करेगा।

- वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के स्वसामर्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

विषय की गम्भीरता, गहनता व समयाभाव को देखते हुए अनुसंधान के अध्ययन क्षेत्र को सुनिश्चित किया है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के क्षेत्र को निम्नानुसार परिसीमन किया गया है। यह परिसीमाएं निम्नलिखित है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन को राजस्थान के दक्षिणांचल में स्थित वागड़ क्षेत्र के डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा जिले तक सीमित रखा गया।

शोध विधि

सर्वेक्षण एवं विशेष सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित उद्देश्य हेतु व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की एक विधि होता है।

प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान परिस्थिति से सम्बन्धित हैं। अतः उक्त अध्ययन के लिए **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया जाएगा।

शोध उपकरण

सामान्यतः किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए दो उपकरणों का प्रयोग किया जाता है –

1. स्वनिर्मित
2. मानकीकृत

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा केवल मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जो इस प्रकार है –

1. स्वसामर्थ्य प्रमाणीकृत उपकरण

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन राजस्थान के दक्षिण अंचल में स्थित वागड़ क्षेत्र में स्थित निराश्रित एवं सामान्य बालकों का कियागया है। वागड़ प्रदेश के डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा जिले की विभिन्न तहसीलों व पंचायत समितियों से आए इन निराश्रित बालक–बालिकाओं को इसके अन्तर्गत लिया जा रहा है।

उपरोक्त समस्त न्यादर्श यादृच्छिक (Random) न्यादर्श द्वारा किया गया है।

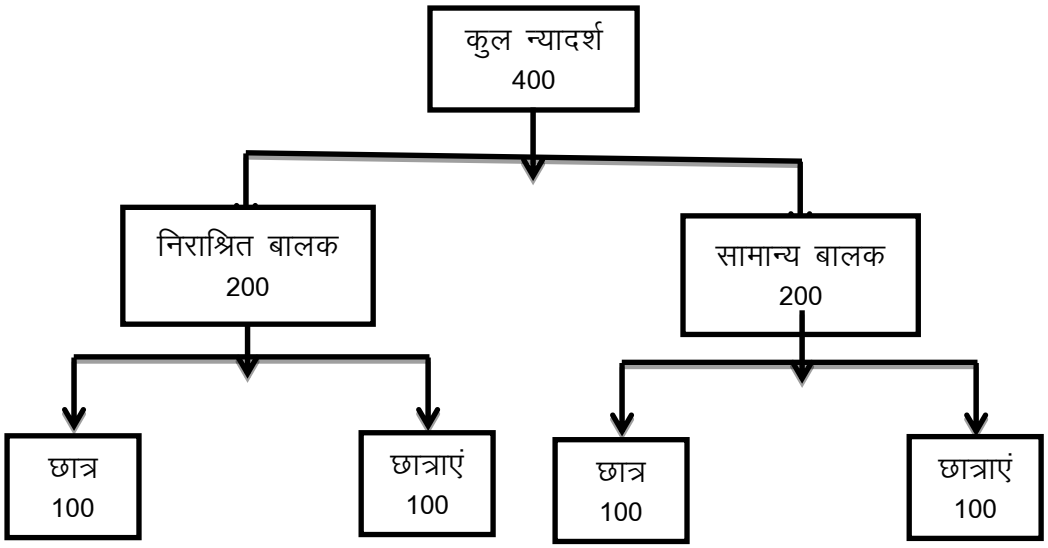

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सामान्यतया सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी वह तकनीकी है जिसके द्वारा एक विशेष तरीके से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य में संभावित रूप से निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा–

1. **मध्यमान** (Mean)

सांख्यिकी में औसत अंक को मध्यमान कहा जाता है। मध्यमान वह बिन्दु या प्राप्तांक है जिसके ऊपर और नीचे के प्राप्तांकों का विचलन समान होता है। मध्यमान ज्ञान करते का सूत्र निम्नानुसार है–

$$\text{मध्यमान } (Mean) = \frac{\Sigma x^2}{n}$$

2. **मानक विचलन** (S.D.) .

दिये हुए प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गों के मध्यमान का वर्गमूल द्वारा प्राप्त मान ही मानक विचलन कहलाता है। मानक विचलन ज्ञान करने का सूत्र निम्नानुसार है–

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum x^2}{n} - \left[\frac{\sum x}{n}\right]^2} \rightarrow$$

3. टी–मान (T-Test) –

टी–मान का प्रयोग ऐसी परिस्थितियों में किया जाता है जहां पर दो स्वतंत्र समूह भिन्न न्याद र्श से लिए जाते हैं तथा किसी एक आधार पर उनकी तुलना यह जानने के लिए की जाए कि उनमें क्या भिन्नता हैं। टी–मान ज्ञात करने का सूत्र निम्नानुसार है –

$$t = \frac{m_1 - m_2}{\sqrt{\frac{sd_1^2}{n_1} + \frac{sd_2^2}{n_2}}}$$

वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों एवं सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन–

सारणी संख्या 1

वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों एवं सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ का तुलनात्मक अध्ययन मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा टी–मान के आधार पर विशलेशण

क्र. सं.	निराश्रित व सामान्य बालकों के मध्य तुलनात्मक स्व–सामर्थ्य के क्षेत्र	N	निराश्रित बालक–बालिकाएं		सामान्य बालक–बालिकाएं		टी–मान	0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता
			मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	आत्म विश्वास	100	13.4	2.96	14.6	3.81	1.23	सार्थक अन्तर नहीं
2.	स्व–सामर्थ्य अपेक्षा	100	14.45	2.91	15.5	1.98	1.30	सार्थक अन्तर नहीं
3.	सकारात्मक दृश्टिकोण	100	12.45	3.21	13.45	2.76	1.03	सार्थक अन्तर नहीं
4.	अपेक्षाएं	100	16.00	4.05	16.0	4.43	0.0	सार्थक अन्तर नहीं

स्वतंत्रता के अंश *क्रि198* .05 स्तर पर सारणी मान =2.024

.01 स्तर पर सारणी मान =2.712

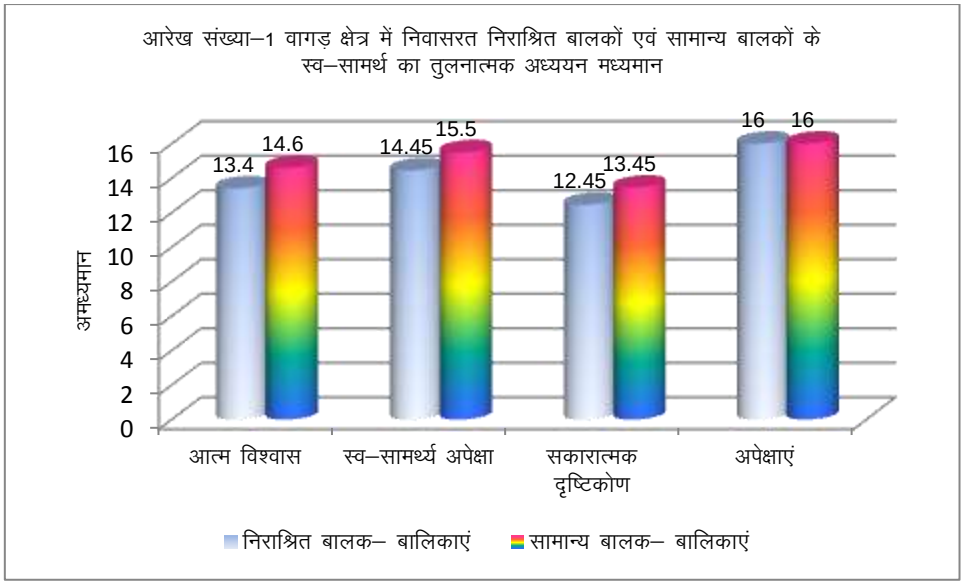

व्याख्या

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 01 के ऑकड़ों का अवलोकन करने पर क्षेत्रवार निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं–

1. **आत्म विश्वास**–वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालको व सामान्य बालकों के प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 13.4, 14.6 व 2.96 व 3.81 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। दोनों समूहों के लिए टी–मान 1.23 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (*कत्रि198*) के .05 सारणी मान 2.024 से कम पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों में स्व–सामर्थ्य के आत्म विश्वास क्षेत्र में समानता पायी गयी।
2. **स्व–सामर्थ्य अपेक्षा**–वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के स्वसामर्थ्य अपेक्षा के क्षेत्र में प्राप्त प्राप्तांकों से मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.45, 15.50 व 2.91, 1.98 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। दोनों समूहों के लिए टी–मान 1.30 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता के अंश (*कत्रि198*) के 0.5 के सारणी मान 2.024 से कम पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के मध्य स्व–सामर्थ्य के क्षेत्र अपेक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
3. **सकारात्मक दृष्टिकोण**–वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ्य के सकारात्मक दृश्टिकोण के क्षेत्र में प्राप्त प्राप्तांकों से मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 12.45, 13.45 व 3.21, 2.76 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। दोनों समूहों के लिए टी–मान 1.03 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता के अंश (*कत्रि198*) के .05 सारणी मान 2.024 से कम पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के मध्य स्व–सामर्थ्य के क्षेत्र सकारात्मक दृश्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया हैं।
4. **अपेक्षाएं**–वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ्य के अपेक्षा के क्षेत्र में प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 16.0, 16.0 व 4.05, 4.43 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। दोनों समूहों के लिए टी–मान 0.0 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता के अंश (*कत्रि198*) के .05 सारणी मान 2.024 से कम पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः वागड़ क्षेत्र में निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के मध्य स्व–सामर्थ्य के क्षेत्र अपेक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया हैं।

शोध निष्कर्ष

शोध के दौरान वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित बालकों व सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ्य में तुलनात्मक अध्ययन में समानता पायी गयी।

वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित एवं सामान्य बालकों के स्व–वामर्थ्य को लेकर किये गये तुलनात्मक शोध से यह निश्कर्श निकलता है कि उक्त दोनों प्रकार के बालकों में निश्चित रूप से स्व–सामर्थ्य समान ही होता है। जहॉ सामान्य बालक किसी कार्य को स्वयं के स्व–सामर्थ्य से जितना गुणवत्ता रूप से सम्पादित करता है उतना ही निराश्रित बालक भी गुणवत्ता रूप से कार्य को सम्पादित करते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध द्वारा वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित एवं सामान्य बालकों के स्वसामर्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन कर निश्कर्श प्राप्त किया गया। जिसमें शैक्षिक निहितार्थ निम्ननिलिखित अनुसार पाए गए–

1. **विद्यार्थियों के लिए** –प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए बहु उपयोगी साबित हो सकता है। भोध के लिए प्रयुक्त परिणामों के आधार पर निराश्रित एवं सामान्य बालकों के स्व–सामर्थ्यके आधार पर समाज में होने वाले प्रभावों की जानकारी प्राप्त कर अपनी जीवन शैली को उत्कृश्ट बना सकते हैं। निराश्रित व सामान्य बालकों के तुलनात्मक अध्ययन से विद्यार्थी एक–दूसरे के गुणों व कमियों से अवगत होकर अपने जीवन में आदर्शता को स्थापित कर एक श्रेश्ठ नागरिक बनने की ओर अग्रसर हो सकते हैं। निराश्रित बालक व बालिकाओं में शारीरिक व मानसिक रूप से किसी प्रकार का कोई भेद नहीं होता है। इस बात से भी वे अवगत हो सकते हैं। और जीवन में मिलने वाले अवसरों को भुना कर आगामी जीवन को ऊॅचाइयों दे सकते हैं।

2. **शिक्षकों केलिए** –जैसा कि कोठारी आयोग में कहा गया है कि विद्यालय के कक्षा–कक्षों में भारत के भविष्य का निर्माण होता है। जिसमें शिक्षक की महत्ती भूमिका को दिखाया गया है। निश्चित रूप से एक आदर्श शिक्षक के लिए भी निराश्रित व सामान्य बालकों को समान सुअवसर प्रदान करना आना अति आव यक है। एक शिक्षक आदर्श शिक्षक तभी कहा जा सकता है जबवह ऐसे सभी निराश्रित व सामान्य बालकों में बिना भेद सिखने–सिखाने का अवसर प्रदान करें और आवश्यकतानुसार मनोवैज्ञानिक दृष्टि से छात्रों को प्रोत्साहित करें तब ही वे छात्र उन्नति कर पायेंगे और इस हेतु प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष एक आदर्श शिक्षक के निर्माण में महत्ती भूमिका निभा सकते हैं।

3. **विद्यालय के लिए** –प्रस्तुत शोध के प्राप्त निष्कर्षों से एक आदर्श विद्यालय के निर्माण में बहुत ही सहयोग प्राप्त हो सकता है। चूंकि विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहां निराश्रित व सामान्य दोनों प्रकार के बालकों का आगमन होता है और उक्त दोनों प्रकार के बालकों के बीच उचित सामंजस्य स्थापित कर एक ही कक्षा–कक्ष में शिक्षण करवाकर उन्नति की ओर अग्रसर करवाने में इस प्रकार के शोध के प्राप्त परिणाम सार्थक साबित होंगे। एक आदर्श विद्यालय वहीं माना जाता है जहॉ बिना किसी भेद–भाव के (जाति, लिंग, निराश्रित, सामान्य ऊॅ'च–नीच आदि) शिक्षक सम्पन्न होता हो। ऐसे में शोध के प्राप्त परिणाम अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

4. **समाज के लिए** –प्रस्तुत शोध के प्राप्त परिणाम एक आदर्श समाज के निर्माण में अमूल्य योगदान दे सकते है। चूंकि समाज में निराश्रित व सामान्य दोनों प्रकार के बालक–बालिकाएं पाये जाते है और ऐसे में शोध के परिणाम आदर्श समाज है निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका निभा सकते हैं। शोध परिणाम समाज में व्याप्त विसंगतियों व बुराइयों के माहोल में भी योगदान देकर इस समस्याओं को दूर कर सकते हैं।

5. **नवीन अनुसंधान के लिए** –प्रस्तुत शोध कार्य नवीन अनुसंधान के लिए भी बहुत ही उपयोगी है। प्रस्तुत शोध के सम्बन्धित साहित्य व निश्कर्शों का प्रभावी अध्ययन कर भावी शोधकर्ता द्वारा इसी क्षेत्र में नवीन अनुसंधान कर इस शोध को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

अनुसंधान का क्षेत्र इतना व्यापक है कि किसी भी एक अनुसंधानकर्ता द्वारा सीमित समय एवं साधनों में उस विषय के सभी पक्षों को स्पर्श नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत विशय पर कार्य करते समय तथा कार्य समाप्त करने के पश्चात् शोधकर्ता इस परिणाम पर पहुॅचे है कि प्रस्तुत शोध समस्या से सम्बन्धित अन्य कई क्षेत्र हो सकते हैं, जिन पर अध्ययन किया जा सकता है।

अतः शोधकर्ता द्वारा इस अध्ययन के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए जो इस प्रकार है–

(1) प्रस्तुत शोधकार्य को शोधकर्ता ने राजस्थान के वागड़ क्षेत्र के डूॅगरपुर एवं बांसवाड़ा जिले तक ही सीमित रखा है। जबकि इसी अनुसंधान कार्य को अन्य जिलों संभाग, राज्य स्तर व राश्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।

(2) प्रस्तुत शोध कार्य वागड़ क्षेत्र में निवासरत निराश्रित व सामान्य बालकों को लेकर किया गया है जबकि इसी शोध कार्य को निराश्रित व सामान्य बालकों के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है।

(3) प्रस्तुत शोध कार्य में केवल स्वसामर्थ्य, समायोजन व आकांक्षा स्तर पर ही वागड़ क्षेत्र में निवासरत बालक–बालिकाओं पर अध्ययन किया गया है जबकि उक्त शोध विशय पर विभिन्न अन्य आयामों जैसे–सामाजिक, आर्थिक, वैवाहिक आदि क्षेत्रों पर भी विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

(4) उक्त शोध विशय पर राज्य सरकार द्वारा संचालित निराश्रित गृहों व सामाजिक संगठनों द्वारा संचालित निराश्रित गृहों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(5) इस शोध कार्य को शोधकर्ता द्वारा सीमित न्यादर्श पर किया गया है अतः इसी शोध कार्य को और अधिक विस्तृत व व्यापक स्तर पर भी किया जा सकता है।

(6) प्रस्तुत शोध कार्य निराश्रित व सामान्य बालक–बालिकाओं के मध्य किया गया है जिसे शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के निराश्रित व सामान्य बालकों के मध्य भी किया जा सकता है।

(7) शोधार्थी द्वारा लिए गये शोध विशय वागड़ क्षेत्र में निवासरत बालक–बालिकाओं के विद्यालय स्तर का अध्ययन किया गया है। जिसे विस्तृत करते हुए उक्त निराश्रित व सामान्य बालकों के जीविकोपार्जन हेतु जुटाए गये साधनों पर भी किया जा सकता है।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में शोध सारांश निश्कर्श एवं सुझाव प्रस्तुत किये है। प्रस्तुत शोध शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। शोध के निश्कर्श एवं परिणाम कतिपय सीमाओं के आधार पर ही विवेचित किये गये हैं। परिणामों को और प्रामाणिक बनाने के लिए अथवा विभिन्न संदर्भों में इन परिणामों के सत्यापन के लिए इसी प्रकार के अन्य अध्ययनों की आवश्यकता प्रतीत होती है।फिर भी यह शोध भविष्य में होने वाले शोध कार्यों एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणास्पद होगा, ऐसा विश्वास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	कपिल, एच.के. (2006)	रू	''साॅख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2.	ढौंडियाल, एस.एन. फाटक, अरविन्द बी. (1972)	रू	शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3.	ढौंडियाल, एस.एन. फाटक, अरविन्द बी. (2003)	रू	शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
4.	भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, मिनाक्षी (2008)	रू	शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर.लाल बुक डिपो।
5.	त्यागी, गुरूसरन दास (2007–08)	रू	प्रारम्भिक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
6-	अग्रवाल जे.सी. (2006)	रू	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

7.	गैरेट, हैनरी ई. (1972)	रू	शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, हिन्दी अनुवाद, कल्याणी प्रिण्टर्स, लुधियाना।
9.	गुड, सी.वी. एवं स्केट्स डी.ई. (1554)	रू	अनुसंधान विधियॉ, न्यूयार्क पब्लिकेशन।
10.	सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोत्रा आर.एन. आदि (1973)	रू	शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
11.	त्रिपाठी मधुसुदन (2007)	रू	शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
12.	सद्गोपाल अनिल (2004)	रू	शिक्षा में बदलाव का सवाल, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली
13.	ओढ़ एल् के. (1991)	रू	शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
14.	भटनागर, सुरेश (1997)	रू	आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ : लॉयल बुक डिपो।
15.	रायजादा, बी.एस. (1997)	रू	''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
16.	कौल, लोकेश (1998)	रू	शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस।
17.	गुप्ता, एस.पी.,गुप्ता, अल्का (2007)	रू	उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
18.	अरुण कुमार सिंह (2010)	रू	''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में शोध विधियाँ'' मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली।
19.	सुखिया एस. पी. मेहरोत्रा, आर. एन. (1970)	रू	''शैक्षिक अनुसधान के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

*** Corresponding Author:**

रूपलाल कुम्हार, *पी.एच.डी. स्कोलर*

डॉ. अर्पणा श्रीवास्तव, *सहायक आचार्य*

लो.मा.ति.शि.प्र.म. डबोक (सी.टी.ई) उदयपुर

Email – rp9983561975@gmail.com, Mob.-9983561975